International Journal of Sanskrit Research 2018; 4(4): 125-126

International Journal of Sanskrit Research

अनन्ता

ISSN: 2394-7519
IJSR 2018; 4(4): 125-126
© 2018 IJSR
www.anantaajournal.com
Received: 22-05-2018
Accepted: 23-06-2018

अनिता चौधरी
गेस्ट फैकल्टी, संस्कृत विभाग
राजकीय कॉलेज धर्मशाला,
हिमाचल प्रदेश, भारत

Correspondence
अनिता चौधरी
गेस्ट फैकल्टी, संस्कृत विभाग
राजकीय कॉलेज धर्मशाला,
हिमाचल प्रदेश, भारत

निरोष्ठ्य रामचरिम महाकाव्य में प्रकृति–चित्रण

अनिता चौधरी

प्रस्तावना

निरोष्ठ्य रामचरिम महाकाव्य में प्रकृति शब्द सृष्टि का पर्याय है, जिसमें अचेतन तथा चेतन शब्द प्रमुख रूप से सम्मिलित है। जिसमें मुख्यतयः जीवन की रहस्यात्मकता, वास्तविकता तथा आध्यात्मिक गुणों की सत्ता प्रकृति में सन्निहित है निरोष्ठ्य रामचरित महाकाव्य में कभी का प्रायः सौंदर्य एवं माधुर्य के अनन्य उपासक के रूप में देखा जाता है। वे जिस प्रकार मन के भावों को जाने में सिद्धस्त हैं, उसी प्रकार प्रकृति के अन्तः एवमं बाह्य सौंदर्य को परखने में भी सफल है। निरोष्ठ्य रामचरित महाकाव्य में प्रकृति द्विविध रूपों में चित्रित है – आलम्बन रूप तथा उद्दीपन रूप। जिस में कवियों ने प्रकृति के दोनों रूपों का बड़े कौशल के साथ चित्रण किया है। निरोष्ठ्य रामचरित महाकाव्य तथा अन्य महाकाव्यों मे जैसे महाभारत, रामायण, से ही वर्णन की ही परम्परा शुरू हुई और धीरे–धीरे यह प्रकृति वर्णन की परम्परा अष्वघोष आदि कवियों तक पहुँच गई।

संस्कृत वाड्मय के कवि प्रायः सौंदर्य के अनन्य उपासक देखे जाते हैं। उनका हृदय सौम्यभाव का पक्षपाती होता है। वे जिस प्रकार मानव मन के भावों को जानने में सिद्धस्त हैं, उसी प्रकार प्रकृति के अन्तः एवं बाह्य सौन्दर्य को परखने में भी सफल हैं। प्रकृति के जीवन्तचित्रण की चमत्कारिता सहृदयजनों को मोहित कर लेती है। प्रकृति मानव की सदा से सहचरी है। संस्कृत काव्यों में प्रकृति द्विविध रूपों में चित्रित है– आलम्बन रूप, उद्दीपन रूप। प्रथम में तो प्रकृति स्वयं वर्ण्य होती है। उद्दीपन रूप में प्रकृति रति आदि प्रेम भावों को उद्दीप्त करके रसास्वादन करवाती है।[1] संस्कृत कवियों ने प्रकृति के दोनों रूपों का बड़े कौशल के साथ चित्रण किया है। साथ ही साथ उन्होंने प्रकृति को शक्तिस्वरूपा मानकर उससे शिक्षा ग्रहण करने का संदेश भी दिया है।[2]

महाकवि रूचिकर उपाध्याय ने अपने महाकाव्य में प्रकृति का मनोरम चित्रण प्रस्तुत किया है। उन्होंने मानव को प्रकृति के समान चित्रित किया है ताकि वे इसके सौन्दर्य को समझ सकें। उनके मन में प्रकृति के प्रति असीम अनुराग है। उन्होंने प्रकृति को निकट से देखा है और उसके साथ आत्मीयता का सम्बन्ध स्थापित कर लिया है। रूचिकर ने अपने महाकाव्य में प्रकृति के नाना रूपों जैंसे नदी, पर्वत, वन, क्रीड़ा, पक्षी, मेघ, ऋतु, मच्छली, सागर तथा नगर आदि का वर्णन किया है, जिसका विवेचन इस प्रकार है–

नदी वर्णन

प्रकृति जगत में नदियाँ मानव के लिए वरदान स्वरूप सिद्ध हुई हैं। यही मान्यता स्वीकार कर लोग उनको 'देवी' की संज्ञा से समादर देते चले आ रहे हैं। नदियों में स्नाना करने से शरीर थकान रहित एवं पवित्र हो जाता है। रूचिकर के काव्य में गंगा नदी का वर्णन इस प्रकार द्रष्टव्य है– दशरथ पुत्र रामचन्द्र पापों का नाश करने वाली गंगा जी के पास पहुँच गए। वहाँ सभी ने अपने पापों का नाश करने के लिए स्नान, दान आदि किया।[3]

पर्वत वर्णन

पर्वत वर्णन के समय इतिवृत्त पूर्णरूपेण पर्वतमय ही दृष्टिगत होता है। राम के सारे कर्मों में सहयोगी पर्वत ही रहे हैं। ये ही विश्रामस्थल, गन्तव्य आदि सब कुछ रहे हैं। रूचिकर ने द्वितीय सर्ग में चित्रकूट पर्वत का स्वाभाविक वर्णन कर अपनी कुशलता का परिचय दिया है जैसे – वह चित्रकुट पर्वत गेरू, अबररख, बालूष्वेत प्रस्तर, कृष्ण प्रस्तर आदि से युक्त होते हुए अनेक वर्ण होने के कारण अर्थानुसार नाम वाला था, जिसकी तलहटी में सिद्व मुनि लोग रहते हैं तथा गुफाओं में सुख से निवास करते हैं।[4] इसी भान्ति कवि ने पर्वत का वर्णन अन्यत्र स्थल पर भी किया है– उस पर्वत के पास झरने के तट पर तपस्या में लगे हुए ऋषिगण प्रसन्नता–पूर्वक रहते हैं, जिनके अतिस्नेहयुक्त होने के कारण हाथ में स्थित घास को कृष्णसार मृग खाते है।[5]

वन वर्णन

वन कामविरक्त पुरूषों से युक्त होने के साथ साथ हिंसक जन्तुओं के सम्राज्य वाला भी होता है। वन–प्रान्त में फलों से लदे वृक्षों की परोपकारभावना इतनी अलौकिक प्रतीत होती है कि इससे वनों का जीवन्त रूप में ग्रहण स्वयमेव प्रमाणित हो जाता है। इनका दृष्य मनोहारी होता है। निरोष्ठ्य रामचरित महाकाव्य में वन का चित्रण भी प्रभावशाली रूप में प्राप्त होता है – राम अपनी पत्नी एवं भाई के साथ आम आदि के तथा सखुआ, देवदारू एवं केसर के वृक्षों से आच्छादित दण्डक बन गये।[6] उस वन में इधर उधर टहलते हुए उसने अत्यन्त मनोहर दण्डकारण्य में बहुत दिन तक निवास किया।

ऋतु वर्णन

रूचिकर ने षड् ऋतुओं में विशेष रूप से शरद् ऋतु को प्राथमिकता दी है। यह वर्णन सम्पूर्ण निरोष्ठ्य रामचरित महाकाव्य में विदग्धतापूर्ण एवं सुन्दरतम दृष्टिगत होता है, जिसका वर्णन निम्नवत् है।

शरद् ऋतु

कवि ने पाँचवें सर्ग में शरद् ऋतु का वर्णन किया है– अब राम की प्रसन्नाता के लिए शरद् ऋतु आयी, जिसमें मेघ हट गये, तीखी सूर्य की किरणों से राह की कीचड़ दूर हो गई और नदियाँ क्षीण हो गई।[7]

सागर वर्णन

रूचिकर के प्रकृति चित्रण में सागर वर्णन भी दर्शनीय है– वह सागर गंगा आदि नदियों के साथ एक ही समय समागम करता है और उसका रत्नों का खजाना नाम के समान ही समाज में पर्याप्त आदर देखा जाता है।[8] अन्यत्र ष्लोक में जिस समुद्र के भाग में गोह, घड़ियाल आदि रहते हैं, उसके भाग में समुद्रीय अग्नि और अन्य भाग में प्रलय काल में सारे संसार को अपने पेट में रखकर विष्णु भगवान् जी सोते हैं।[9]

सन्दर्भ ग्रन्थ–सूची

1. संस्कृत साहित्य का इतिहास, पृ० 136
2. वही, पृ० 140
3. आससादाङ्घसां हन्त्रीं गङ्गां दाशरथिश्चलन्।
   एनसां तत्र नाशाय चक्रे स्नानादिकाः क्रियाः।। निरोष्ठ्य रामचरित महाकाव्यम्, 2.21.
4. स चित्रराशिः शिखरी यथार्थ–
   संज्ञः सचित्रः किल गैरिकाद्यैः।
   अधित्यकायां किल यस्य सिद्धाः
   तिष्ठन्ति नन्दन्ति च कन्दरस्थाः।। वही, 2.33.
5. यस्यान्तिके निर्झरसन्निधाने
   तिष्ठन्ति हृष्टा ऋषयः सनिष्ठाः।
   येषां करस्थानि तृणान्यदन्ति
   स्नेहाधिकानां किल कृष्णसाराः।। निरोष्ठ्य रामचरित महाकाव्यम्, 2.34.
6. ततः स दण्डकारण्यं गतः कान्तादि–संगतः।
   ततं सालै रसालाद्यैः शाल–शैलेय–केसरैः।। वही, 3.1.
7. अथागता शरत्तस्य हर्षाय निगलद्धना।
   चण्डचण्डकरग्रस्तशादा क्षीणतरङ्गिणी।। निरोष्ठ्य रामचरित महाकाव्यम्, 5.1.
8. एकदा सङ्गमञ्चके गङ्गासरितां सदा।
   यस्य रत्नाकरस्यालं दृश्यते सदृशादरः।। निरोष्ठ्य रामचरित महाकाव्यम्, 5.31ण
9. नक्रादयः सन्ति यदेकदेशे
   यस्यैकदेशे सलिलेन्धगाग्निः।
   दिष्टान्तकाले जठरे निधाय
   जगन्ति, शेते हरिरेकदेशे।। वही, 5.33